बस्तूर

एक फ़ारसी लोक कथा



मेहरदाद बहार, चित्र: निकज़ाद नोजूमी

बस्तूर

एक फ़ारसी लोक कथा



मेहरदाद बहार, चित्र: निकज़ाद नोजूमी

माता-पिता और शिक्षकों के लिए प्रस्तावना

बस्तूर फारस के प्राचीन महाकाव्य "शाहनामा" या "राजाओं की पुस्तक" के एक अंश से प्रेरित है. वो बच्चों के लिए एक प्रेरक कहानी है. कहानी के लेखक, डॉ. मेहरदाद बहार, तेहरान विश्वविद्यालय में फ़ारसी भाषा और तुलनात्मक पौराणिक कथाओं के प्रोफेसर हैं. डॉ. बहार बच्चों की कई पुस्तकों के जाने-माने लेखक हैं, जिनमें “जमशेद शाह” भी शामिल है - जिसे ईरान की बाल पुस्तक परिषद द्वारा वर्ष की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक चुना गया है. अंग्रेजी बोलने वाले बच्चों के लिए बस्तूर का अनुवाद और संपादन करते समय, लेखक ने मूल महाकाव्य के स्वर और शैली को ईमानदारी से बनाए रखने का हर संभव प्रयास किया है. हालाँकि, पाठ में कुछ बदलाव अवश्य किये गए हैं. उदाहरण के लिए, नामों को सरल बनाया गया है, और फ़ारसी पौराणिक कथाओं के कुछ अस्पष्ट संदर्भों को छोड़ दिया गया है. इस तरह के प्रयास "डेविड और गोलियथ" की कहानी की तरह ही, पश्चिमी बच्चों के बीच एक युवा ईरानी साहसी की सराहना को बढ़ाएँगे.

— प्रकाशक

बहुत समय पहले, फारसी और तूरान कट्टर दुश्मन थे. उन्होंने आपस में कई लड़ाइयाँ लड़ीं और अपने कई बहादुर योद्धाओं को खोया जिनके नाम भुला दिए गए हैं. लेकिन कोई भी उस लड़ाई को नहीं भूला है जो दो ऊँचे पहाड़ों के बीच एक विशाल घाटी में हुई थी - वह प्रसिद्ध लड़ाई जिसे "बस्तूर" नाम के एक युवा फारसी लड़के ने जीती.

घोड़ों, रथों, हाथियों और सैनिकों के भालों और ढालों ने दोनों पहाड़ों की ढलानों को ढक लिया था. हाथियों की चिंघाड़, बिगुलों की ध्वनि, घोड़ों की हिनहिनाहट और सैनिकों के गीतों और चिल्लाहटों ने धरती और आकाश को हिला दिया था. एक पहाड़ की चोटी पर फारस के राजा गोशटेप और सभी फारसी सरदार बैठे थे. दूसरे पहाड़ पर तूरान के राजा जस्सेब एक सिंहासन पर बैठे थे और उनके चारों ओर सभी तूरानी सरदार इकट्ठे थे. दोनों राजाओं की सेनाएँ घाटी के उस पार एक-दूसरे का सामना कर रही थीं.

बस्तूर के पिता, ज़री, एक साहसी योद्धा और फ़ारसी सेना के कमांडर थे. उस दिन युद्ध की तैयारी के लिए, ज़री ने अपना बैंगनी लबादा उतारा, और अपना कवच और लोहे की हेलमेट पहन ली. फिर उन्होंने अपनी स्टील की तलवार और एक लंबा भाला उठाया. अंत में, उन्होंने राजा गोशटेप के सामने वाली ज़मीन को चूमा, जैसा कि सभी नायक युद्ध में जाने से पहले करते हैं. फिर, अपने बड़े सफ़ेद घोड़े पर सवार होकर, उन्होंने उसकी लगाम खींची. घोड़ा अपने पिछले पैरों पर खड़ा हुआ, हिनहिनाया, फिर घाटी में युद्ध की ओर पहाड़ से नीचे सरपट दौड़ा. घोड़े द्वारा उड़ाई गई धूल के बीच, लंबा योद्धा ऐसा लग रहा था मानो वह बादलों में उड़ रहा हो.

तूरानी सेना के पास पहुंचकर ज़री चिल्लाया, "तुममें से कौन मुझसे लड़ेगा?"

तूरानी सेना का कोई भी सैनिक नहीं बोला. सब खामोश रहे.

ज़री फिर से चिल्लाया, "क्या कोई नहीं है?"

पहाड़ों और घाटी में उनकी ऊँची आवाज़ गूंज उठी- कोई नहीं- कोई नहीं?



तूरान के राजा को डर लगा कि अगर उसे कोई ऐसा साहसी योद्धा नहीं मिला जो ज़री का सामना कर सके, तो फिर उसके लोग हार जाएँगे. उसने अपने सरदारों को पुकारा, "क्या हमारे बीच कोई ऐसा तूरानी योद्धा नहीं है जो ज़री से लड़ सके और उसे हरा सके?" लेकिन कोई भी सैनिक आगे नहीं आया और न ही एक शब्द बोला. फिर राजा जस्सेब चिल्लाए, "जो कोई भी ज़री को मार देगा, उसे मेरी खूबसूरत बेटी सरस्ता से शादी करने का अधिकार मिलेगा."

अचानक तूरान का दुष्ट जादूगर बेदारफ खड़ा हुआ. वो कुछ कदम आगे बढ़ा, उसने राजा को प्रणाम किया और फिर ज़ोर से शेखी बघारते हुए बोला. "कृपया मेरे लिए एक घोड़ा तैयार करने का आदेश दें. मैं महान ज़री को आसानी से हरा सकता हूँ, लेकिन उससे मैं अपने जादू से जीतूँगा, अपनी ताकत से नहीं."

तब राजा जस्सेब ने जादूगर के लिए एक घोड़ा तैयार करने का आदेश दिया. बेदाराफ ने सभी तुरान सरदारों के सामने, जादू से खुद को एक बूढ़े आदमी में बदल लिया. फिर जादूगर घोड़े पर सवार होकर फारसी शिविर की ओर चला. जब उसने एक कमज़ोर बूढ़े आदमी को अपनी ओर आते हुए देखा तो ज़री हँस पड़ा.

"अब मुझे पता चल गया है कि तुरानी लोग कितने कायर हैं. क्या तुरान की सेना में कोई शूरवीर नहीं बचा है? उन्होंने क्यों इस प्राचीन बूढ़े को महान ज़री से लड़ने के लिए भेजा है?"

"हे महान सेनापति," बेदाराफ ने चालाकी से कहा. "कौन मूर्ख एक मरियल बूढ़े आदमी को ऐसे शक्तिशाली नायक से लड़ने के लिए भेजेगा? किसी ने मुझे आपसे लड़ने के लिए नहीं भेजा है. मैं केवल उस महान नायक के दर्शन करने आया हूँ जिससे लड़ने की किसी में हिम्मत नहीं है."



ज़री की किसी बूढ़े आदमी को मारने की कोई इच्छा नहीं थी. उसने बेदाराफ की ओर अपने पीठ की और तुरानी सेना की तरफ अपना मुंह किया, और चिल्लाया, "क्या तुम्हारे बीच कोई साहसी आदमी नहीं बचा है? क्या हड्डियों का यह बूढ़ा बोरा ही तुम्हारा आखिरी योद्धा है?"

जैसे ही ज़री मुड़ा, दुष्ट बेदारफ़ ने अपने लबादे में छिपाया हुआ जहरीला खंजर निकाला, अचानक कूदा और खंजर ज़री की पीठ में घोंप दिया. ज़री ने दर्द से चीख़ मारी जो पहाड़ों के बीच गूँज उठी. फिर वह ज़मीन पर गिर पड़ा. महान योद्धा अब अपना भाला आसमान में नहीं फेंक सकता था. वह अब अपनी चीख से पहाड़ों को नहीं हिला सकता था. वह अब घाटी में अपने घोड़े को नहीं दौड़ा सकता था और न ही हवा में धूल के बादल उड़ा सकता था. धूल जम गई. फिर सबकुछ शांत हो गया. ज़री के छोटे बेटे बस्तूर सहित पूरी फ़ारसी सेना ने, अपने कमांडर को गिरते हुए और बूढ़े आदमी को तूरान के शिविर की ओर वापस भागते हुए देखा. फिर राजा गोशटेप ने ज़ोरदार चिल्लाहट के साथ फ़ारसियों को, तूरान पर हमला करने और ज़री का बदला लेने का आदेश दिया. लेकिन अब फ़ारसी योद्धा लड़ने से डर रहे थे क्योंकि उनके सबसे शक्तिशाली कमांडर की हत्या हो चुकी थी. इसलिए राजा ने चिल्लाकर कहा, "जो कोई भी अब तुरानियों के खिलाफ फारसियों का नेतृत्व करेगा और ज़री की मौत का बदला लेगा, उसे फारसी सेना का कमांडर नियुक्त किया जाएगा और वह मेरी खूबसूरत युवा बेटी, राजकुमारी होमा से शादी करेगा."

ज़री के युवा पुत्र बस्तूर ने राजा का वचन सुना और उसने पूरी फारसी सेना के सामने अकेले कहा, "मैं तुरानियों से लड़ूँगा. मेरे लिए एक घोड़ा तैयार करो. मैं अपने पिता की मौत का बदला लेने जाऊँगा." लेकिन राजा गोशटेप ने बस्तूर को देखा और कहा, "तुम एक बहादुर लड़के हो, लेकिन बेटा तुम अभी बहुत छोटे हो."

"राजा," बस्तूर चिल्लाया. "मैं फारसी सेना के किसी भी योद्धा की तरह बहादुर और शक्तिशाली हूँ. क्या मेरे पिता ने मुझे घोड़े की सवारी करना और तलवार चलाना नहीं सिखाया? हालाँकि मैं छोटा हूँ, लेकिन मेरे पास एक वयस्क व्यक्ति की ताकत और कौशल है."



राजा गोशटेप ने भौंहें सिकोड़ीं, "नहीं, बस्तूर, अपने पिता की मौत का बदला लेने के लिए तब तक प्रतीक्षा करो जब तक तुम बड़े नहीं हो जाते. युद्ध में तुम्हारी ताकत का परीक्षण करने के लिए यह समय बहुत जल्दी होगा."

बस्तूर ने राजा की सलाह को धैर्यपूर्वक सुना. सारी बातें सुनने के बाद उसने कुछ देर प्रतीक्षा की. जब राजा अन्य फारसी सरदारों से चर्चा करने लगे तब बस्तूर जल्दी से अपने तंबू में चला गया. उसने अपनी छोटी तलवार अपने कपड़ों के नीचे छिपा ली. उसने अपना धनुष अपने कंधे पर लटका लिया. फिर वह चुपके से अस्तबल में गया, अपने पिता के सबसे तेज़ घोड़ों के पास.

ज़री का बड़ा सफ़ेद घोड़ा तभी अस्तबल में लौट रहा था. घोड़े का सिर नीचे झुका हुआ था और वह दुख से भरा हुआ था. उसकी पीठ ज़री के खून से लाल थी. ज़री का तीर तरकश अभी भी उसके बगल से लटका हुआ था.

बस्तूर दौड़कर घोड़े के पास गया और उसका सिर अपने हाथों में लेकर उसे चूमा और कहा, "ओह, मेरे पिता क्यों मारे गए? बताओ, मेरे पिता को किसने मारा?" घोड़े ने केवल उदास और धीरे से अपना सिर हिलाया.

तब बस्तूर ने अस्तबल के रखवाले से कहा, "कृपया मुझे उठाएँ और मेरे पिता के घोड़े की काठी पर बिठाएँ, और मुझे थोड़ी सवारी करने दें."

रखवाले को बस्तूर बहुत पसंद था. बस्तूर अक्सर अस्तबल में आता था, और रखवाला अक्सर उसे घोड़ों की सवारी करने देता था. लेकिन रखवाले ने उसे कभी ज़री के बड़े सफ़ेद घोड़े पर सवारी नहीं करने दी थी क्योंकि वो घोड़ा इतना तेज़ था कि वह छोटे लड़के को आसानी से ज़मीन पर गिरा सकता था. लेकिन उस दिन, वो घोड़ा बहुत शांत और पालतू लग रहा था. इसलिए, मुस्कुराते हुए, रखवाले ने बस्तूर को उठाया और उसे घोड़े पर बिठा दिया. बस्तूर ने लगाम पकड़ी, अपने पैरों को घोड़े की कमर पर कसकर दबाया, और फिर नीचे झुककर उसके कान में धीरे से फुसफुसाया.

"हे सुंदर सफ़ेद घोड़े! मुझे पता है कि तुम दुखी हो. मुझे पता है कि तुम अपने सवार की मौत के कारण दुःख से भरे हुए हो. अगर तुम मुझे युद्ध के मैदान में ले चलोगे, तो मैं तुम्हारे मालिक की मौत का बदला लूंगा."





घोड़ा खुशी से उछल पड़ा और जोर से हिनहिनाया. बस्तूर गिरने वाला था, लेकिन उसने लगाम खींची और अपने पैरों को घोड़े पर और भी कसकर दबाया. फिर बस्तूर ने अपनी छोटी तलवार हवा में घुमाई और चिल्लाया, "युद्ध के मैदान की ओर आगे बढ़ो!" घोड़ा घाटी में युद्ध के मैदान की ओर पहाड़ से नीचे सरपट दौड़ा. बस्तूर की चीख और बड़े घोड़े की सरपट दौड़ने की आवाज पहाड़ों के बीच गूंज उठी. राजा गोशटेप और उसके सरदार लड़के के लिए भयभीत और चिंतित थे. राजा ने बस्तूर को तुरंत रोकने का आदेश दिया. दो सैनिक उसे वापस लाने के लिए बस्तूर के पीछे दौड़े. लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी.

जब तुरान के योद्धाओं ने पहली बार एक छोटे फ़ारसी लड़के को मैदान में अपनी ओर दौड़ते देखा, तो वे हँस पड़े. लेकिन ज़री का तेज घोड़ा इतना क्रोधित था कि वह हर तुरानी सैनिक जो उसके पास आता उसे दुलत्ती जमाता था. उसके बाद बस्तूर अपनी छोटी तलवार से दुश्मन की छाती को चीर देता था. क्रोधित घोड़े के खुरों और बस्तूर की तलवार के वार से सैकड़ों तुरानी सैनिक मारे गए. धीरे-धीरे बस्तूर लड़ता हुआ उस जगह पहुँचा जहाँ उसके पिता का शव पड़ा था. ज़री ज़मीन पर गिरा पड़ा था, और उसका सिर और चेहरा धूल से सना हुआ था.

बस्तूर अचानक रुक गया और कराह उठा. "हे पिता, आप क्यों मारे गए? हे वीर पुरुष, किसने आपकी जान ली? काश मैं घोड़े से उतरकर आपको अपनी बाहों में ले सकता और आपके सिर और चेहरे से धूल हटा सकता. लेकिन मैं अभी कुछ भी नहीं कर सकता हूं. अगर मैं घोड़े से उतरा, तो मैं फिर अकेले आपके घोड़े पर दुबारा नहीं चढ़ पाऊंगा, और तुरानी सैनिक आकर मुझे भी मार डालेंगे." फिर दुखी होकर वह पीछे हट गया.







पहाड़ के ऊपर से राजा जस्सेब ने देखा कि बस्तूर एक के बाद एक उसके शक्तिशाली योद्धाओं को मार रहा था. अंत में, कोई और सैनिक बस्तूर का सामना नहीं कर सका. वे वास्तव में ज़री के बेटे से डर गए थे. भयभीत होकर, राजा अपने सरदारों की ओर मुड़ा और उसने कहा, "क्या तुम लोगों में से कोई इस छोटे से लड़के से लड़ने को तैयार नहीं है?" लेकिन किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया. तब राजा जस्सेब ने पुकारा, "जो उस लड़के से लड़ेगा मैं उसे बहुत सारा धन और तूरान सेना की कमान देने का वादा करता हूँ."

एक बार फिर, दुष्ट बेदारफ़ आगे बढ़ा और चालाकी से मुस्कुराया. "मेरा जादू-टोना, मिट्टी तक को नष्ट कर सकता है, जैसे मैंने उसके पिता को नष्ट किया." उन शब्दों के साथ, बेदारफ़ ने खुद को एक बूढ़ी औरत, एक बदसूरत बुढ़िया में बदल डाला. इस बार उसने ज़हरीले खंजर को अपनी चौड़ी स्कर्ट में छिपाया और फिर घोड़े पर सवार होकर युद्ध के मैदान में गया. बस्तूर ने देखा कि एक बूढ़ी बुढ़िया अपने काले घोड़े पर सवार होकर उसकी ओर आ रही थी. फिर वो अपने पिता की तरह हँसा और उसने पूछा, "क्या तुम मुझसे लड़ने आई हो, बूढ़ी औरत?"

"ओह, नहीं," बेदारफ ने चालाकी से कहा. "कौन मूर्ख एक बूढ़ी औरत को साहसी योद्धा से लड़ने के लिए भेजेगा? मैं तो तुम्हारे दर्शन करने आई हूँ क्योंकि मैंने सुना है कि पूरे तूरान में ऐसा कोई युवक नहीं है जो तुम्हारे जितना शक्तिशाली और सुंदर हो."

बस्तूर ने उसकी बात पर विश्वास किया. एक बूढ़ी औरत को मारने का उसका दिल नहीं किया. इसके बजाय, वह मज़ाक उड़ाने के लिए तूरानी सेना की ओर मुड़ा, "क्या मैंने तुम्हारे सभी बहादुर योद्धाओं को पहले ही मार दिया है? क्या तुम मुझसे लड़ने के लिए कोई साहसी योद्धा नहीं ढूँढ़ पाए जिससे तुम्हें एक बूढ़ी औरत को भेजना पड़ा?"

लेकिन जैसे ही बस्तूर ने कहा, बेदारफ ने चालाकी से अपने घोड़े को घुमाया और शेखी बघारने वाले लड़के के पीछे-पीछे चला. उसने अपना ज़हरीला खंजर निकाला और फिर ज़री की तरह वो बस्तूर को भी मारने के लिए तैयार हो गया. अचानक ज़री के घोड़े ने उस दुष्ट जादूगर की गंध पहचान ली. सफेद घोड़ा पीछे की ओर उछला और वो बेदारफ़ का सामना करने के लिए घूमा. जब बस्तूर ने देखा कि जादूगर बेदारफ, उस पर हमला करने वाला है, तो उसने अपने कंधे से धनुष उतारा, उसमें एक तीर फंसाया और डोरी को कस कर खींचा. बेदारफ डर कर भागा, लेकिन ज़री के घोड़े ने उसका तेज़ी से पीछा किया. बस्तूर ने अपने पैरों को घोड़े की कमर पर दबाए रखा. उसने अपने हाथों में धनुष और तीर भी तैयार रखा.

"रुको, कायर!" बस्तूर चिल्लाया, "क्या सभी तुरानी तुम्हारे जैसे कायर होते हैं? उसे विश्वासघाती बुढ़िया से जो औरत नहीं है, अब मैं अपने पिता की मौत का बदला लूँगा." और फिर बस्तूर ने अपने धनुष से तीर चलाया जो जादूगर की पीठ में जाकर लगा. जादूगर बेदारफ की दर्द भरी चीख आसमान में गूंज उठी. उसने अपना खंजर गिरा दिया और वो खुद अपने घोड़े से गिर पड़ा.





तुरान के सैनिक जोर-जोर से चिल्लाने लगे और भागने लगे. बस्तूर ने अपनी तलवार ऊँची उठाई और ज़ोर से युद्ध की पुकार लगाते हुए उसने तुरानी सेना पर हमला किया.

जब फारसियों ने तुरानियों को भागते हुए देखा, तो वे अपने बहादुर युवा योद्धा का पीछा, अपने घोड़ों और हाथियों के साथ करने लगे. रात होते-होते तुरानी सेना पूरी तरह से हार गई और राजा जस्सेब भाग गया. अगले दिन फारसी सेना ने सुबह से रात तक जीत का जश्न मनाया.

राजा गोशटेप, सरदारों के साथ अपने शाही सिंहासन पर बैठे, गोशटेप ने बस्तूर को आगे आने के लिए बुलाया और कहा, "बस्तूर, तुमने हमारे लिए यह लड़ाई जीती है. बदले में तुम क्या चाहोगे?"

बस्तूर ने उत्तर दिया. "हे राजा, केवल वही जो आपने वादा किया था. फ़ारसी सेना की कमान और युवा राजकुमारी, आपकी बेटी का हाथ."

सभी सरदार हँस पड़े. बस्तूर की ओर देखते हुए राजा भी हँसा और बोला, "बस्तूर, तुम एक बहादुर लड़के हो, लेकिन तुम अभी भी बस एक छोटे लड़के ही हो. फ़ारसी सेना की कमान संभालने और राजकुमारी से शादी करने से पहले तुम्हें एक आदमी होने तक इंतज़ार करना होगा."



बस्तूर ने एक बार फिर धैर्यपूर्वक राजा की बात सुनी. लेकिन जब उसने सारी बातें सुन लीं, फिर वह गुस्से से बोला. "मैं एक लड़का हो सकता हूँ, लेकिन मैंने आप सभी से बेहतर लड़ाई लड़ी है, और मैं आप सभी से अधिक बहादुर हूँ. मुझे एक आदमी की तरह इनाम क्यों नहीं मिल सकता?"

फिर बस्तूर, गोशटेप और उसके सरदारों के बीच से भाग गया और अपने तंबू में जाकर अपने बिस्तर पर लेट गया.

बस्तूर उदास और दुखी था, और वह सोचता रहा, वो एक लड़का क्यों था? वह एक ऊंचा और बड़ा आदमी क्यों नहीं था ताकि वह फ़ारसी सेना की कमान संभाल सके? क्या वह अन्य सभी योद्धाओं से ज़्यादा बहादुर नहीं था?

उसके बाद बस्तूर रोने लगा, और फिर रोते-रोते उसने प्रकाश के देवता हुरमज़्दा से प्रार्थना की. "हे हुरमज़्दा! मेरी मदद करो. मुझे जल्दी से बड़ा और ताकतवर बनाओ. मुझे एक आदमी बनाओ ताकि कोई मुझ पर हँसे नहीं. मेरी मदद करो ताकि मुझे वह इनाम मिले जिसका मैं हकदार हूँ."

फिर बस्तूर सो गया. लेकिन हुरमज़्दा ने उसकी प्रार्थना सुन ली थी.

घंटों बीत गए.

बस्तूर जाग गया.

उसने देखा कि उसके हाथ बड़े हो गए थे.

वह उछल पड़ा और अपने पैरों को देखने लगा. उसका पूरा शरीर बड़ा हो गया था. पहले तो उसे यकीन नहीं हुआ. उसने खुद को चुटकी काटी और अपने पैरों को हिलाया, ताकि वो सुनिश्चित कर सके कि वह कहीं कोई सपना तो नहीं देख रहा था.

वह सपना नहीं देख रहा था. वह ऊंचा, बड़ा और तंदरुस्त हो गया था. वो एक सुंदर, लंबा, चौड़े कंधों वाला आदमी बन गया था - बिल्कुल अपने पिता ज़री जैसा. बस्तूर खुशी से जोर से चिल्लाया और फिर तंबू से बाहर निकला.

गोशटेप और उसके सरदार अभी भी जीत का जश्न मना रहे थे. बस्तूर उनके बीच पहुंचा और उसे राजा को प्रणाम किया और कहा, "अब आपने जो वादा किया था उसे निभाएं क्योंकि अब मैं एक आदमी हूँ."

पहले तो राजा और उसके सरदार चौंक गए और उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ. लेकिन धीरे-धीरे बस्तूर ने उनसे सारी बात बताई कि कैसे हुरमज़्दा ने उसकी प्रार्थनाएँ सुनीं थीं. जब सरदारों को सब कुछ समझ में आया तब उन्होंने अपने नए कमांडर की ज़ोर से जय-जयकार की.

और इस तरह उस दिन ज़री का बेटा बस्तूर फ़ारसी सेना का कमांडर बना और उसने राजा की खूबसूरत सुन्दर बेटी से शादी भी की.





